ई-समाचार

अंक – 01 द्विमासिक पत्रिका वर्ष - 2014

निदेशक का संदेश

ई-समाचार मासिक पत्रिका का प्रथम अंक आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अति प्रसन्नता एवं आनंद की अनुभूति हो रही है। इस पत्रिका के माध्यम से अब हम पाठकगणों को संस्थान से जुड़ी गतिविधियों की जानकारी राजभाषा हिंदी के माध्यम से सांझा कर पाएंगे। संस्थान अपनी गतिविधियों के अतिरिक्त भारत सरकार की राजभाषा नीतियों के कार्यान्वयन के लिए भी प्रतिबद्ध है और इसके कार्यान्वयन के लिए निरंतर प्रयासरत है। ई-समाचार का प्रकाशन इस दिशा में उठाया गया एक सार्थक प्रयास है जो संस्थान के कर्मचारियों के बीच हिंदी की लोकप्रियता को और अधिक पल्लवित करेगा।

यह अंक संस्थान के तृतीय दीक्षांत समारोह के विशेषांक के रूप में भी प्रकाशित किया जा रहा है। इसके अतिरिक्त इस अंक में संस्थान में अक्तूबर माह के दौरान आयोजित विभिन्न गतिविधियों की जानकारी भी प्रकाशित की जा रही है। इस पत्रिका में एक साहित्य स्तंभ है जिसमें देश के विभिन्न साहित्यकारों के परिचय के साथ उनकी प्रतिष्ठित रचनाओं को भी प्रकाशित किया जाएगा।

इस सार्थक और सफल प्रयास के लिए हार्दिक बधाई देते हुए मैं उम्मीद करता हूँ कि यह समाचार पत्रिका अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने में सफल होगी और संस्थान के सदस्यों के साथ बाह्य पाठकों के लिए आने वाले समय में यह ई-पत्रिका और भी आकर्षक, उपयोगी, रोचकपूर्ण साबित होगी तथा इसका हर एक नया अंक ज्ञानवर्धित होने के साथ पाठकों को संस्थान की गतिविधियों की जानकारी से जोड़े रखेगा।

प्रो. सुजीत रॉय
निदेशक

स्वच्छ भारत अभियान

पुष्प अर्पित करते संस्थान निदेशक

शपथ लेते संस्थान के सदस्यगण

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान भुवनेश्वर द्वारा देश के प्रधानमंत्री के आह्वान पर 02 अक्तूबर, 2014 को गांधी जयंती के उपलक्ष्य पर स्वच्छ भारत अभियान की औपचारिक शुरुआत की गई। कार्यक्रम का आयोजन संस्थान के तोषाली भवन परिसर में किया गया। कार्यक्रम में संस्थान निदेशक प्रो. सुजीत रॉय, प्रो. गणपति पंडा, पूर्व उपनिदेशक, डॉ. एन.सी. साहू, संकायाध्यक्ष (शैक्षणिक कार्य), डॉ. बी.के.राय, कुलसचिव सहित संस्थान के अन्य प्राध्यापकगण, अधिकारीगण एवं कर्मचारीगण उपस्थित थे। कार्यक्रम की शुरुआत करते हुए संस्थान के निदेशक प्रो. रॉय सहित अन्य सभी उच्च पदाधिकारियों ने गांधी जी की प्रतिमा पर पुष्प भेंट की। तदोपरांत संस्थान के कुलसचिव डॉ. बी.के.राय ने उपस्थित संकाय सदस्यों, अधिकारियों एवं स्टाफ सदस्यों को स्वच्छ भारत की शपथ हिंदी में दिलवाई। स्वच्छता की ओर कदम बढ़ाते हुए संस्थान निदेशक ने गंदगी न करने और न किसी को भी करने देने का संकल्प लेने के लिए सभी को प्रेरित किया। कार्यक्रम को आगे बढ़ाते हुए संस्थान निदेशक एवं अन्य पदाधिकारियों ने हाथ में झाड़ू लेकर परिसर के आस-पास पड़ी गंदगी को स्वयं साफ किया और उपस्थित सभी संकाय सदस्यों, अधिकारियों एवं कर्मचारियों से परिसर एवं इसके आस पास इलाकों को स्वच्छ रखने की अपील की।

तृतीय दीक्षांत समरोह 2014

तृतीय दीक्षांत समारोह में मंचस्थ अतिथिगण

रिपोर्ट प्रस्तुत करते संस्थान निदेशक प्रो. सुजीत रॉय

संस्थान का तृतीय वार्षिक दीक्षांत समारोह का आयोजन 18 अक्तूबर 2014 को भुवनेश्वर शहर स्थित खनिज़ एवं पदार्थ प्रौद्योगिकी संस्थान के प्रेक्षागृह में किया गया। समारोह में मुख्य अतिथि श्री अविनाश चंदर, वैज्ञानिक सलाहकार रक्षा मंत्री, सचिव रक्षा अनुसंधान एवं विकास विभाग तथा महानिदेशक (डीआरडीओ), श्री जी.सी. पति, मुख्य सचिव ओडिशा सरकार, श्री एस.के. रुंगटा, अध्यक्ष अधिशासी मंडल एवं संस्थान निदेशक प्रो. सुजीत रॉय एवं अभिषद परिषद सहित अन्य गणमान्य उपस्थित थे। दीक्षांत समारोह में कुल 09 पीएच.डी छात्रों के साथ 39 प्रौद्योगिकी निष्णात छात्रों तथा 124 बी.टेक छात्रों को उपाधि प्रदान की गई।

समारोह का आरंभ शैक्षणिक समागम तथा राष्ट्रीय गीत के साथ हुआ। श्री एस.के.रुंगटा, अध्यक्ष, अधिशासी मंडल ने दीक्षांत समारोह के आरंभ की औपचारिक घोषणा की। संस्थान निदेशक प्रो. सुजीत रॉय ने संस्थान की वर्तमान उपलब्धियों का उल्लेख करते हुए जानकारी दी कि संस्थान की स्थापना 22 जुलाई 2008 को हुई थी। संस्थान ने भुवनेश्वर शहर से अपना कार्य 22 जुलाई 2009 से प्रारंभ किया था। इन छः वर्षों में भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान भुवनेश्वर के परिवार सदस्यों का अनुभव सुखद भरा रहा। संस्थान ने कई पड़ावों का सामना करते हेतु स्वयं को वैश्विक प्रतिस्पर्धा एवं स्थानीय उपयुक्ता के रूप में तैयार करने के लक्ष्य को भी हासिल किया। विगत दो दीक्षांत समारोह में हमने केवल बी.टेक एवं पीएच.डी छात्रों को उपाधियाँ प्रदान की गई थी। इस वर्ष एम.टेक के छात्रों को भी उपाधि प्रदान की जा रही है जो सभी के लिए गौरव का विषय है। मुझे आप सभी के समक्ष संस्थान की यात्रा के महत्वपूर्ण पहलुओं को प्रस्तुत करने में बड़ा हर्ष हो रहा है।

इस दौरान अपने संबोधन में उन्होंने जानकारी दी कि संस्थान अभी शहर के विभिन्न स्थानों से कार्य कर रहा है जिसमें सीएसआईआर-आईएमएमटी एवं सीटीटीसी की कार्यशालाएं एवं प्रयोगशालाएं भी शामिल है, साथ ही उन्होंने सीएसआईआर-आईएमएमटी, सीटीटीसी, सीआईपीईटे (सीपेट) और शहर के अन्य सभी संस्थानों के प्रति भी आभार व्यक्त किया जिनके कारण संस्थान दिन-प्रतिदिन अपनी ऊँचाइयों को छूने में सफल हो रहा है। इसके साथ ही उन्होंने विशेष रूप से ओडिशा राज्य सरकार के पदाधिकारियों के प्रति भी आभार व्यक्त किया।

उन्होंने बताया कि संस्थान के स्थाई परिसर अरुगुल का निर्माण कार्य पूरे जोरों पर है और कुछ भवनों जैसे छात्रावास, स्टाफ गृह एवं अतिथिगृह प्राप्त कर लिए गए हैं। इसके अतिरिक्त उन्होंने यह भी जानकारी दी कि हम ओडिशा सरकार द्वारा पुरी-कोणार्क के बीच जमीन आबंटन की औपचारिक रूप से प्रतीक्षा कर रहे है जिसका उपयोग बंगाल की खाड़ी तटीय पर्यवेक्षण केंद्र (बॉबको) की स्थापना के लिए किया जाएगा जो भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान भुवनेश्वर एवं पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय, भारत सरकार की मुख्य पहल है। संस्थान अभी 05 मुख्य अभियांत्रिकी शाखाओं में बी.टेक, 08 विशिष्टीकरण विषयों में संयुक्त एम.टेक-पीएच.डी, 05 विशिष्टिकरण विषयों में संयुक्त एम.एससी-पीएच.डी और विज्ञान, अभियांत्रिकी, मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान में पीएच.डी पाठ्यक्रम प्रदान कर रहा है। वर्तमान में संस्थान में 900 से अधिक छात्र अध्ययनरत है। इसके अतिरिक्त संस्थान में एक सौ संकाय सदस्य सहित 1 चेयर प्राध्यापक, 11 अधिकारी एवं 79 सहायक स्टाफ संस्थान की गतिविधियों के लिए अपना योगदान दे रहे हैं।

इसके साथ ही उन्होंने यह भी जानकारी दी कि संस्थान के संकाय सदस्य, शोधार्थी एवं अवरस्नातक छात्र विभिन्न क्षेत्रों में अनुसंधान कार्यों में सक्रिय हैं। संस्थान मुख्य रूप से ऊर्जा, जलवायु परिवर्तन, खनिज़ एवं पदार्थ, उत्पादन एवं जैव अभियांत्रिकी के अनुसंधान कार्यों में संलिप्त है। संस्थान ने विभिन्न वित्त पोषित एजेंसियाँ जैसे डीएसटी, सीएसआईआर, आईएसआरओ, डीआरडीओ, आईसीएसएसआर,एनएएलसीओ,एनपीओएल, आईयूएसएसटीएफ, आईएनसीओआईएस आदि से विभिन्न अनुदानित परियोजनाएँ तथा सलाहकारिता परियोजनाएं प्राप्त की है जिसकी लागत 25 करोड़ से अधिक है। संस्थान ने लगभग 900 से अधिक प्रस्तावों को जमा किया है जिसकी लागत लगभग 40 करोड़ से अधिक है। वर्तमान में, संस्थान ने मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार की सहायता से नोवल ऊर्जा पदार्थ उत्कृष्टता केंद्र की स्थापना की है।

उन्होंने यह भी जानकारी दी कि भुवनेश्वर में अपनी स्थापना के पाँच वर्ष के भीतर ही संस्थान के संकाय सदस्यों एवं छात्रों ने देश एवं विदेश के प्रतिष्ठित जरनलों में नए ज्ञान की सृजनता के साथ लगभग 390 शोध पत्रों को प्रकाशित किया है। देश और विदेश में आयोजित विभिन्न सम्मेलनों में लगभग 200 शोध पत्र प्रस्तुत किए गए है। इसके अतिरिक्त 08 पेटेंटों को भी फाइल किया गया है।

अपनी स्थापना से ही संस्थान ने विदेश के अनेक संस्थानों के साथ शैक्षणिक एवं अनुसंधान सहयोगात्मक कार्य हेतु संबंध स्थापित किए है। संस्थान द्वारा शोधार्थी विनियम कार्यक्रम को बढ़ावा देने के लिए अनेक सम्मेलन एवं कार्यशालाएँ आयोजित की गई।

संस्थान के संकाय सदस्यों, छात्रों एवं स्टाफ सदस्यों को अनेक पुरस्कार प्राप्त हुए है। लोकमत द्वारा भा.प्रौ.सं.भुवनेश्वर को सर्वश्रेष्ठ अभिय़ांत्रिकी संस्थान (पूर्व) के पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। प्रो. एस.त्रिपाठी को भारतीय भूभौतिकीय संघ के फेलो, राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी के फेलो में रूप में चयन किया गया है। प्रो. गणपति पंडा को वैज्ञानिक उत्कृष्टता के लिए बीजू पट्टनायक ओडिशा विज्ञान अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया। प्रो. एन.पी.एच. पद्मनाभन को रासायनिक विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी की श्रेणी के अधीन वास्विक पुरस्कार प्रदान किया गया। डॉ. राज कुमार सिंह को भारत जीवाश्मविज्ञान सोसायटी द्वारा सूक्ष्मजीवाश्मविज्ञान के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान देने हेतु मणि शंकर स्वर्ण पदक प्रदान किया गया। डॉ. सी.एन.भेंडे को अप्रैल-जुलाई 2013 की अवधि के लिए "सम्मानीय एडजंक्ट फैलो, विक्टोरिया यूनिवर्सिटी आस्ट्रेलिया" से सम्मानित किया गया। डॉ. राजन झा को भारतीय विज्ञान अकादमी बैंगलूर के एसोसियट एवं डी.ए.ए.डी.-आई.आई.टी संकाय विनिमय कार्यक्रम 2013 के तहत डी.ए.ए.डी फैलोशिप से सम्मानित किया गया।

उपाधि प्राप्तकर्ता छात्रगण

अपने संबोधन के अंत में उन्होंने संस्थान के सभी स्नातक छात्रों, उपाधि प्राप्तकर्ताओं एवं पदक विजेताओं को बधाई दी। इसके साथ ही उन्होंने कहा कि "मुझे पूरा विश्वास है कि आप सभी लोग संस्थान में व्यतीत किए गए पलों पर गर्वान्वित महसूस करेंगे और आपकी यही यादें आपको ज्ञान की खोज़ के साथ मातृभूमि की सेवाओं के लिए प्रेरित करेंगी। मैं आप सभी को संस्थान के पूर्वछात्र बनने की आमंत्रित करता हूँ और आप ही सभी इस संस्थान की ख्याति, शांति, शौर्य एवं ज्ञान के ब्रांड अंबेस्डर बनेंगे"। इसके साथ ही उन्होंने यह भी कहा कि संस्थान विश्व के श्रेष्ठ प्रौद्योगिकी संस्थानों की दौड़ में स्वयं को श्रेष्ठ साबित करने तथा विज्ञान एवं अभियांत्रिकी तथा शोध की नई ऊँचाई प्राप्त करने के लिए निरंतर प्रयासरत है।

जयहिंद

संस्थान के पदक एवं पुरस्कार विजेता

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान भुवनेश्वर प्रतिवर्ष अपने छात्रों को उनकी श्रेष्ठतम शैक्षणिक एवं अन्य क्रियाकलापों में योग्यता अर्जन के लिए पुरस्कृत करता है। इस वर्ष के पदक एवं पुरस्कार विजेता निम्नलिखित हैं –

श्री सौम्य प्रकाश दाश, विद्युत विज्ञान विद्यापीठ को संपूर्ण प्रौद्योगिकी स्नातक (बी.टेक) (प्रतिष्ठा) छात्रों में श्रेष्ठतम

भारत के राष्ट्रपति स्वर्ण पदक विजेता श्री सौम्य प्रकाश दाश

शैक्षणिक योग्यता प्रदर्शन करने हेतु **भारत के राष्ट्रपति का स्वर्ण पदक** से सम्मानित किया गया।

श्री सौम्य प्रकाशन दाश, **श्री डी.रेवंत एवं श्री के. युवराज बालाजी राव** को अपने-अपने संबंधित विद्यापीठों में श्रेष्ठतम शैक्षणिक योग्यता प्रदर्शन करने हेतु **संस्थान रजत पदक** से सम्मानित किया गया।

निदेशक स्वर्ण पदक विजेता सुश्री आशा विजयेता

सुश्री आशा विजयेता, पृथ्वी, महासागर एवं जलवायु विज्ञान विद्यापीठ को संपूर्ण प्रौद्योगिकी निष्ठात (एम.टेक) छात्रों में श्रेष्ठतम शैक्षणिक योग्यता प्रदर्शन करने पर संस्थान **निदेशक स्वर्ण पदक** से सम्मानित किया गया।

सुश्री आशा विजेयता, पृथ्वी, महासागर एवं जलवायु विज्ञान विद्यापीठ, **श्री सरगदम शाखर**, विद्युत विज्ञान विद्यापीठ, श्री **एन.आनंद बाबू**, खनिज़, धातुकर्म एवं पदार्थ अभियांत्रिकी विद्यापीठ को अपने-अपने संबंधित विद्यापीठों में प्रौद्योगिकी निष्णात (एम.टेक) में श्रेष्ठतम शैक्षणिक योग्यता प्रदर्शन करने हेतु **संस्थान रजत पदक** से सम्मानित किया गया।

मुख्य अतिथि का संबोधन

संस्थान के तृतीय दीक्षांत समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित डॉ. अविनाश चंदर ने अपने संबोधन में कहा कि मुझे यह कहते हुए बड़ी प्रसन्नता का आभास हो रहा है कि भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान भवुनेश्वर के तृतीय दीक्षांत समारोह में मुझे मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया है जहाँ मुझे प्रतिष्ठित प्राध्यापकों , संकाय सदस्यों, शोधार्थी के बीच मंच सांझा करने का सुअवसर प्राप्त हुआ है। मुझे हमेशा से ही छात्रों के बीच रहना पसंद है और उनके साथ

डॉ.अविनाश चंदर

रहने के कारण मैं अपने आपको उनकी तरह युवा समझता हूँ और उनके विचारों को अपनी गतिविधियों से जोड़ने का प्रयास करता रहता हूँ। आज यहाँ बहुत से छात्रों को उनकी वर्षों की कड़ी मेहनत का प्रतिफल प्राप्त होने वाला है। दीक्षांत समारोह छात्र जीवन से व्यवासियक जीवन के रूप में पहला परिवर्तन है जो आपको आपके लक्ष्यों की ओर अग्रसर करने का एक इशारा है। स्नातक के बाद आप अपने जीवन की एक नई यात्रा शुरु करने जा रहे है जहाँ पर आपके ज्ञान एवं कुशलता की परीक्षा की जाएंगी जो आपने यहाँ से अर्जित किया है। यह परीक्षा आपके जीवन में एक नई चुनौतियाँ एवं नए अनुभव लेकर आएंगे। अभी तक आप अपने मित्रों, अपने परिवार सदस्यों, अपने प्राध्यापक की सहायता से लाभांवित थे। आज के बाद आपको अपनी दिशा, मार्ग स्वयं बनाने होंगे। आपके जीवन में ऐसे भी पल आएंगे जहाँ आप सफल होंगे और ऐसी भी समय जहाँ आप विफल होंगे। विफलता के समय आपको पूरा धीरज और सयंम बनाए रखना होगा ताकि आप स्थिति से जल्द-जल्द उभर पाएं। विफलता का डर अपने मन से निकाल कर सफलता के लिए निरंतर प्रयास करते रहें। मुझे यहाँ पर आने के बाद यह पता चला कि यह संस्थान आधारीय विज्ञान के मिलाप के साथ-साथ प्रौद्योगिकी की भी शिक्षा प्रदान करता है और सबसे अच्छा यह जानकर लगा कि खनिज़, धातुकार्मिक एवं पदार्थ विज्ञान विद्यापीठ, जो खनिज़ों को पदार्थों के रूप में परिवर्तित करने का महत्वपूर्ण कार्य कर रहा है। ओडिशा राज्य जो खनिज़ों से परिपूर्ण है यहाँ इस तरह का यह प्रयास मील का पत्थर साबित हो रहा है। मैं दिल्ली से हूँ पर मेरा अधिकांश कार्य समय हैदराबाद में बीता लेकिन मेरी सारी मेहनत का फल मुझे ओडिशा के बालेश्वर में प्राप्त हुआ। बालेश्वर डीआरडीओ का एक मुख्य केंद्र है जहाँ हमने अग्नि, पृथ्वी, अस्त्र, आकाश नामक मिसाइलें प्रक्षेपण करने में सफल हुए। इन कार्यों के लिए मैं विशेष रूप से भुवनेश्वर शहर को और ओडिशा राज्य को धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ। विश्व में जब भी कहीं कोई प्रगति या उन्नति होती है तो

विचार की उत्पत्ति इस तरह के शैक्षणिक संस्थानों से ही होती है जहाँ प्रौद्योगिकी को प्रयोगशाला में परिवर्तन करके उत्पादन के क्षेत्र में प्रयोग किया जाता है जिसके फलस्वरूप उद्योगों द्वारा आर्थिक क्रांति का सृजन किया जाता है। मुझे यह पता चला है कि उत्पादन (मैनुफैक्चरिंग) भा.प्रौ.सं. भुवनेश्वर का महत्वपूर्ण क्षेत्र है। अगर हम विश्व में इसका विश्लेषण कर देखेंगे तो आप जानेगें की उत्पादन प्रौद्योगिकी ही एक ऐसा क्षेत्र है जो विश्व में क्रांति ला सकता है। मुझे आशा है कि आप सब इस सफलता के भागीदार बनने में सहायक होंगे। हम हमेशा से शैक्षणिक संस्थानों के साथ संबंधों की स्थापना के लिए तत्पर रहते है। हम शैक्षणिक सस्थानों एवं डीआरडीओ सहसंबंध स्थापित करने के लिए डीआरडीओ की कोष निधि से प्रत्येक वर्ष 500 रु. करोड़ खर्च करते है जिससे नए ज्ञान , नए प्रौद्यिगिकी केंद्र, नई प्रक्रिया केंद्र का सृजन हो सकें। मैं ऐसी संभावना की तलाश कर रहा हूँ जहाँ डीआरडीओ की प्रत्येक प्रयोगशाला शैक्षणिक संस्थानों के सहायक के रूप में कार्य कर सकें। शैक्षणिक संस्थानों में डीआरडीओं की प्रयोगशाला ऊष्मायन केंद्र के रूप में होगी। हम इसके द्वारा देश भर में एक ऐसा मॉडल स्थापित करेंगे जो देश के विकास की गति को और तेज़ करेगा और हम उभरती हुई तकनीकियों से लाभान्वित हो पाएंगे। मुझे यह जानकर बेहद खुशी हो रही है कि आईटीआर रेंज़ बालेश्वर भा.प्रौ.सं. भुवनेश्वर के साथ बहुत ही घनिष्ठता से कार्य कर रहा है और हम इसके माध्यम से डीआरओ और भा.प्रौ.सं. भुवनेश्वर के साथ अच्छे संबंध स्थापित करने में सफल हो पाएंगे। आप सभी जानते है कि भारत की विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संपूर्ण देश के विकास एवं वृद्धि के लिए एक मुख्य उपकरण बनकर उभरी है जिसके कारण हम विश्व में अधिक विकाशील देशों में से गिने जाते है जिसके पास मानवशक्ति, उपलब्धता, दक्षता, क्षमता, परिवक्तवता है। हमें अपने आप को प्रौद्योगिकी के क्रयता के रूप में न देखकर प्रौद्योगिकी के सृजनकर्ता के रूप में देखना चाहिए। मैं यही आशा यह से निकलने वालों छात्रों से भी रखता हूँ । मैं भा.प्रौ.संस्थानों के छात्रों के समूहों को एक साथ काम करने के लिए आमंत्रित करता हूँ जिससे हम सब मिलकर एक नई बुलंदियों को प्राप्त कर वैश्विक प्रतिस्पर्धा की दौड़ में अपने आपको आगे खड़ा करने में सफल हो पाएंगे। गत दो दिन हमारे लिए बहुत ही महत्वपूर्ण रहा जहाँ हमने दो महत्वपूर्ण योजनाएं देखीं उसमें प्रमुख घटना थी पीएसएलवी III क्षेत्रीय नौपरिवहन उपग्रह का प्रक्षेपण जो जीपीएस के सिग्नल को सृजित करता है और स्वयं जीपीएस प्रिसिज़न कोड को सृजित करता है। दूसरी घटना, 1000 कि.मी. वाली क्रूज़ मिसाइल है जिसकी कुल लागत 500 से 600 आटेरली सेल्स में खर्च होने वाली लागत से भी कम है जो मुख्य रूप से फायरिंग प्रशिक्षण के दौरान खर्च हो जाती है। यह कम लागत वाली, उच्च प्रभावशाली, क्षमता वाली मिसाइलें थी । हमारे देश को हमारी प्रौद्योगिकी समुदायों से इस तरह के समाधान की आश है। हम अपनी नई पीढ़ी से नए विचारों के साथ आगे बढ़ते हुए हमारा नेतृत्व करने की आशा रखते है। हमने अनुसंधान बोर्ड, संस्थाएं, परियोजना के लिए वित्त पोषित सहायता आदि की स्थापना की है। हम आप सभी छात्रों को डीआरडीओ के विषयों से संबंधित प्रौद्योगिकी पर कार्य करते हुए पर इसके विषयों पर एम.टेक. पीएच.डी आदि करने के लिए अनुरोध करते हैं। इसके साथ ही उन्होंने कहा कि विश्व में देश की अपनी पहचान स्थापित करने के लिए हमारे पास संपूर्ण आधारिक संरचनाएं जैसे प्राकृतिक संसाधन, मानव शक्ति, जमीन आदि उपलब्ध है। हमारा देश स्वच्छता, नवीकरणीय ऊर्जा, जल प्रबंधन जैसे विषयों पर शोध करने के लिए प्रयत्नशील है जिससे जनमानस को लाभ मिल सके।

उन्होंने कहा कि "भा.प्रौ.संस्थानों से उपाधि प्राप्त करने वालों को नौकरी के बारे में नहीं बल्कि नौकरी सृजन करने के बारे, समृद्धि के सृजन के बारे में अधिक विचार करना चाहिए। इसके साथ हमें अपने प्रौद्योगिकी संस्थानों को विश्व में श्रेष्ठ संस्थानों के रूप में विकसित करने की भी आवश्यकता को समझना चाहिए"। इसी के साथ उन्होंने स्वच्छ भारत अभियान के बारे में बोलते हुए कहा कि स्वच्छता हम सभी के जीवन के लिए अनिवार्य है अगर हम इसकी संभाव्यता को समझेंगे तो हमें इससे कई प्रकार के लाभ मिल सकते हैं। इसी के साथ उन्होंने जानकारी दी कि ई-वेस्ट के माध्यम से हम ऊर्जा को निर्मित कर सकते हैं। हमें अपनी प्रौद्योगिकी का प्रयोग करते हुए एक नई मिसाल कायम करनी होगी। मैं पूर्ण आशा रखता हूँ कि आपकी सफलता सिर्फ आपके द्वारा प्राप्त की गई शिक्षा से ही नहीं मापी जानी चाहिए बल्कि उन मूल्यों से भी आंकी जानी चाहिए जो आपने यहाँ से प्राप्त की है। इसके अतिरिक्त हमें हमेशा दूसरों के विचारों का भी सम्मान करना चाहिए।

अपने संबोंधन के अंत में उन्होंने कहा कि "पढ़ाई का कभी अंत नहीं होता है। आपने यहाँ जो अध्ययन किया है वह केवल एक शुरुआत है जो आपकी क्षमताओं को बढ़ाएगा। आप जब अपने-अपने विशिष्ट क्षेत्रों में जाएंगे तो आप देखेंगे कि हर क्षेत्र की अपनी समस्याएं और चुनौतियाँ है जो आपको सफल बनाने में मददगार सिद्ध होंगी। आपकी प्रतिस्पर्धा किसी ओर से नहीं बल्कि खुद से है। आप देश की प्रतिभा के

मुख्य अतिथि को संस्थान स्मृति चिह्न भेंट करते अध्यक्ष

तोरण हैं और आपको निरंतर इसका प्रदर्शन करते हुए अपने आप को प्रमाणित करना होगा। आप हमेशा बड़ा सोचिए, सकारात्मक सोचिए और रणनीति बनाकर अपने स्वप्नों को वास्तिवकता में बदलने का प्रयास करिए। मैं पुनः आप सभी को आपकी सफलता के लिए बधाई देता हूँ।

कार्यक्रम के अंत में संस्थान के अधिशासी मंडल के अध्यक्ष श्री एस के. रुंगटा ने मुख्य अतिथि डॉ. अविनाश चंदर को संस्थान स्मृति चिह्न भेंट किया। कार्यक्रम का अंत राष्ट्रीय गीत के साथ हुआ।

राष्ट्रीय एकता दिवस

पुष्प अर्पित करते संस्थान निदेशक

शपथ लेते संस्थान के सदस्यगण

देश के प्रथम उप प्रधानमंत्री एवं प्रथम गृह मंत्री के जन्मदिवस के उपलक्ष्य पर संपूर्ण देश के साथ भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान भुवनेश्वर में भी 31 अक्तूबर 2014 को राष्ट्रीय एकता, सुरक्षा और अखंडता दिवस का अनुपालन किया गया। कार्यक्रम का आयोजन बोर्ड कक्ष, तोषाली भवन में किया गया । कार्यक्रम में संस्थान निदेशक प्रो. सुजीत रॉय, प्रो. एस. त्रिपाठी उपनिदेशक, डॉ. एन.सी. साहू, संकायाध्यक्ष (शैक्षणिक कार्य), डॉ. बी.के.राय, कुलसचिव सहित संस्थान के अन्य प्राध्यापकगण, अधिकारीगण एवं कर्मचारीगण उपस्थित थे। कार्यक्रम की शुरुआत करते हुए संस्थान के निदेशक प्रो. रॉय सहित अन्य सभी उच्च पदाधिकारियों ने सरदार वल्लभ भाई पटेल जी की फोटो पर पुष्प भेंट की। तदोपरांत संस्थान कुलसचिव डॉ. बी.के.राय ने राष्ट्रीय एकता की शपथ हिंदी में दिलाई। राष्ट्र एकता दिवस पर बोलते हुए संस्थान निदेशक ने उपस्थित जनगणमान्य से कार्यालय में एकता बनाए रखने की अपील की। इसके साथ ही उन्होंने जानकारी दी कि संस्थान के संकाय सदस्य छात्रों को एकता बनाए रखने पर हमेशा ही मार्गदर्शन करते रहते है जिससे छात्रों के बीच नैतिक व्यवहार की भावना उत्पन्न हो और आपसी भाईचारा बढ़ सकें। अपने संबंधोन के अंत में उन्होंने कहा कि हमें सिर्फ अपने कार्यालयीन संबंधों के लिए ही नहीं बल्कि व्यक्तिगत संबंधों को सुदृढ़ करने के लिए भी इसकी जरुरत है। इसके साथ ही उन्होने संस्थान के सभी संकाय सदस्यों/अधिकारियों/कर्मचारियों को इसी तरह एकता और अखंडता को बनाए रखने हेतु अपील की।

संपादकीय.....

अक्तूबर माह पर्व त्यौहारों की मौज मस्ती से परिपूर्ण होता है। अक्तूबर माह के दौरान हमारे देश के विभिन्न राज्यों में त्यौहारों की धूम होती है। इस वर्ष के अक्तूबर माह में हमने नवरात्रि, दुर्गापूजा, दशहरा, धनतेरस, दीपावली, गोवर्धन पूजा, भाई दूज, छठ पूजा आदि त्यौहार मनाए। वहीं देश के प्रधानमंत्री के आह्वाहन पर गांधी जी की जन्मजयंती पर स्वच्छ भारत अभियान की औपचारिक शुरुआत की गई और यह संकल्प पारित किया गया कि वर्ष 2019 में गांधी जी की 150 वीं जन्मजयंती तक हम हमारे देश से गंदगी का नामो-निशान मिटा देंगे। इसके साथ ही उन्होंने सभी देशवासियों से अपने आस-पास के इलाकों को स्वच्छ रखने तथा स्वच्छता को अपना कर्तव्य समझकर दूसरों को भी गंदगी न करने के लिए प्रेरित करने के लिए अपील की।

हमारी संस्कृति विश्व में अपनी अलग पहचान रखती है, इसलिए हम अपनी संस्कृति पर गर्वामंडित होते आए हैं। हमारे यहाँ आयोजित विभिन्न त्यौहारों का अपना अलग-अलग महत्व है जहाँ नवरात्रि में नौ दिनों तक देवी के नौ रूपों की पूजा की जाती है वहीं पश्चिम बंगाल का दुर्गा पूजा विश्व प्रसिद्ध है। भारतीय संस्कृति वीरता का पूजक भी और शौर्य का उपासक भी है। व्यक्ति और समाज के रक्त में वीरता प्रकट हो इसलिए दशहरे का उत्सव का आयोजन किया जाता है। यह पर्व हमें बुराई पर अच्छाई के विजय की सत्यता का स्मरण कराता है और सत्मार्ग पर निरंतर चलने के लिए प्रेरित करता है। हमारे देश में सभी त्यौहारों में दीपावली सामाजिक और आर्थिक दोनों ही दृष्टि से अत्यधिक महत्व रखती है। दीपावली के दिन संस्थान छात्रों द्वारा श्री गणेश एवं माँ लक्ष्मी की अराधना के साथ छात्रों की कला प्रियता समाज को एक नया संदेश देते हुए "तमसो मा ज्योतिगर्मय" की सार्थकता को प्रमाणित करता है। संस्थान के छात्रों द्वारा दीपावली की सायंकालीन के दिन एल्युमिनियम के तारों और

मिट्टी के दीपकों से अलग-अलग विषयों की आकृति पर दीप प्रज्ज्वलित कर छात्रावास के परिसर को प्रकाशमान किया जाता है और छात्रावास के विभिन्न स्थानों में रंगोली के माध्यम से छात्र अपनी कला-आकृति का भी प्रदर्शन करते है। इस दौरान जहाँ त्यौहारों एवं परिवार के सदस्यों के साथ मिलने वाली खुशी से ऊर्जा प्राप्त होती है वहीं त्यौहारों का समापन थकावट के रूप में इस ऊर्जा को धीमा कर देती है। इस माह से ही देश के विभिन्न इलाकों विशेषकर उत्तर भारत के क्षेत्रों में ठंड का आगाज़ हो जाता है। हमारा देश उन गिने चुने देशों में से एक है जहाँ वर्ष में मौसम अनेक करवटे लेता रहता है जैसे गर्मी, वर्षा, पतझड़, ठंड इत्यादि। हमारे देश को छः ऋतुओं वाला देश भी कहा जाता है। ठंड का मौसम मानव जीवन के लिए अनेक प्रकारों से हितकारी होता है। इस मौसम में बाजार में उपलब्ध होने वाली नई-नई सब्जियों से मिलने वाली शक्ति से शरीर में एक नई ऊर्जा की उत्पत्ति होती है और विभिन्न प्रकारों के ठोस आहारों के सेवन के बाद भी पाचन शक्ति को और सुदृढ़ कर देती है। ठंड का मौसम कई मायनों में मानव जीवन के लिए लाभकारी होता है।

ई- समाचार पत्रिका के इस प्रथम अंक को दीक्षांत समारोह विशेषांक के रूप में प्रकाशित किया जा रहा है जिसमें आप दीक्षांत समारोह से संबंधित विशेष जानकारियाँ प्राप्त कर सकेंगे। दीक्षांत समारोह किसी भी छात्र के लिए वर्षों की कड़ी मेहनत का फल प्राप्त करने वाला दिन होता है। इस दिन सभी छात्रों के मन में अपनी सफलता का हर्षोल्लास रहता है। दीक्षांत समारोह छात्रों को छात्र जीवन से बाहर निकलकर नए व्यवसायिक के रूप में जीवन प्रारंभ करने की सीख के साथ अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर करने हेतु प्रेरित करती है और उन्हें स्वयं के लिए मार्ग को निर्माण करने की दिशा दिखाता है। इस अंक में हमने समारोह के मुख्य अतिथि डॉ. अविनाश चंदर, रक्षा मंत्री के वैज्ञानिक सलाहकार, सचिव डी.डी.आर.एवं डी तथा महानिदेशक, डीआरडीओ द्वारा दिए गए दीक्षांत समारोह व्याख्यान को भी संजोया है जो हम सभी के लिए प्रेरणा का मार्ग बन सकती है। किसी भी संस्थान का गर्व उनके छात्र होते हैं। छात्र अपने व्यावसायिक जीवन में संस्थान द्वारा प्रदान की गई शिक्षा तथा अपनी विलक्षणताओं का प्रयोग करते हुए संस्थान के नाम का गौरवान्वित करते है। इसी अपेक्षा के साथ संस्थान निदेशक ने छात्रों को संस्थान के पूर्वछात्र बनने का अनुरोध किया और कहा कि उनकी प्रतिभा का प्रदर्शन ही संस्थान के नाम को गौरावान्वित और प्रतिष्ठित करेगा। निदेशक द्वारा इस अवसर पर प्रस्तुत की गई रिपोर्ट को भी इस अंक में विशेष रूप से प्रकाशित किया गया है।

संस्थान की विभिन्न गतिविधियों के साथ इस माह का समापन " राष्ट्रीय एकता दिवस" के अनुपालन के साथ संपन्न हुआ। स्वतंत्र भारत के सर्वप्रथम उप प्रधानमंत्री एवं गृहमंत्री के जन्मदिवस पर राष्ट्र की एकता, अखंडता और सुरक्षा की शपथ ली गई।

पत्रिका में विशेष रूप से साहित्य स्तंभ का स्थान रखा गया है जो देश के प्रतिष्ठित साहित्यकारों के जीवन परिचय के साथ उनकी सर्वप्रसिद्ध रचनाओं को वर्णित करेगा। इस माह में हिंदी साहित्य के महाप्राण कहे जाने वाले सूर्यकांत त्रिपाठी निराला के जीवन परिचय की झलक के साथ उनका सुप्रसिद्ध काव्य **"अभी न होगा मेरा अंत"** प्रस्तुत किया गया है।

हमें आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है कि हमारे द्वारा राजभाषा के प्रचार-प्रसार के लिए इस प्रयास को आप सभी सराहेंगे और अपनी-अपनी प्रतिक्रिया से मार्गदर्शन करते हुए हमारा मनोबल बढ़ाएंगे।

नितिन जैन

दीपोत्सव

संस्थान के छात्रों की कला प्रियता का दृश्य

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान भुवनेश्वर का प्रकाश पर्व अर्थात दीपावली यहाँ के छात्रों के सांस्कृतिक एवं कला कौशल का प्रतीक है। जहाँ दुनिया अमावस की स्याह रात्रि में दीपमालाओं से जगमगा उठती है वहीं केसुरा स्थित छात्रावास के विभिन्न स्थानों पर विशाल रंगोली का दृश्य कैनवास में बदल जाता है। प्रतिवर्ष की तरह इस वर्ष भी संस्थान के केसुरा स्थित छात्रावास में दीप प्रज्वलन कार्यक्रम (जिसे इल्यूमिनेशन या इलू के नाम से जाना जाता है) एवं रंगोली प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। उल्लेखनीय है कि छात्रावास की रंगोली एवं इलू किसी न किसी विषय पर आधारित होती है। एल्युमिनियम के महीन तारों द्वारा बाँस की चटाईयों पर दीप इस तरह से बांधे जाते

है कि दीप जलने पर उसकी रोशनी से दृश्य स्पष्ट उभर आते है। डिजाइन के अनुरूप यह चटाईयाँ छात्रावास प्रांगण में खड़ी करके सजाई जाती हैं। इसे कार्यक्रम हेतु छात्रावासों में लगभग 10 हजार दीपों का प्रयोग किया जाता है। रंगोली में सिर्फ रंगों का प्रयोग किया जाता है। इस दौरान तैयार की गई रंगोली सभी दर्शकों को मंत्रमुग्ध करती है तथा विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के छात्रों की कला प्रियता और श्रेष्ठता को दर्शाती है। इसके साथ ही संस्थान के छात्रों द्वारा प्रकृति संरक्षण को ध्यान में रखते हुए हरित दिवाली का आयोजन किया जाता है। पटाखों से होने वाली ध्वनि प्रदूषण को कम करने के लिए और स्वच्छ भारत अभियान की संकल्पना को ध्यान में रखते हुए इस अवसर पर 20 चीनी लालटेन को हवाओं में उड़ाया गया।

रंगोली प्रतियोगिता के लिए 40 टीमों ने अपने नाम दर्ज करवाएं। प्रतियोगिता का निर्णय संस्थान जिमखाना अध्यक्ष द्वारा नियुक्त निर्णायक मंडल द्वारा किया जाता है। रंगोली प्रतियोगिता के विजय टीमें निम्न रहीं हैं -

1) श्रीकांत (निवासी, एसबीआई कॉलोनी)
2) अभिनव, श्रेयांस एवं पलक
3) मनोज, संदीप, कुलदीप अमृत एवं विकास

साहित्य स्तंभ

सूर्यकांत त्रिपाठी निराला

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' हिन्दी कविता के छायावादी युग के प्रमुख कवियों में से एक थे। हिन्दी साहित्य के सर्वाधिक चर्चित साहित्यकारों के महाप्राण सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' का जन्म 21 फरवरी 1896 ई० में पश्चिम बंगाल के मेदिनीपुर जिले के महिषादल नामक देशी राज्य में हुआ था। निश्चित तिथि के अभाव में इनका जन्मदिवस माघ मास में वसन्त पंचमी के दिन मनाया जाता है। निराला जी का जन्म रविवार को हुआ था इसलिए सुर्जकुमार कहलाए। वे मूल रूप से उत्तर प्रदेश के उन्नाव जिले का गढ़कोला नामक गाँव के निवासी थे। उन्होंने हाई स्कूल तक हिन्दी संस्कृत और बांग्ला का स्वतंत्र अध्ययन किया उसके बाद इन्होंने 1918 से 1922 तक महिषादल राज्य की सेवा की। उसके बाद संपादन, स्वतंत्र लेखन और अनुवाद कार्य करने में लिप्त रहे। तदोपरांत वर्ष 1922 से 1923 के दौरान वे कोलकाता से प्रकाशित '**समन्वय**' के संपादन कार्य में संलिप्त रहे। इसके बाद वे लखनऊ से निकलने वाली मासिक पत्रिका '**सुधा**' से 1935 के मध्य तक संबद्ध रहे। उन्होंने कहानियाँ उपन्यास और निबंध भी लिखे हैं किन्तु उनकी ख्याति विशेषरूप से कविता के कारण ही है। 15 अक्तूबर 1961 को इलाहाबाद में उनका निधन हुआ। उनकी पुण्य तिथि पर उनकी सुप्रसिद्ध रचना "अभी न होगा मेरा अंत" निम्न प्रस्तुत है।

अभी न होगा मेरा अंत

अभी न होगा मेरा अंत
अभी-अभी ही तो आया है
मेरे वन में मृदुल वसंत
अभी न होगा मेरा अंत

हरे-हरे ये पात,
डालियाँ, कलियाँ कोमल गात!

मैं ही अपना स्वप्न-मृदुल-कर
फिरुंगा निद्रित कलियों पर
जगा एक प्रत्यूष मनोहर

पुष्प-पुष्प से तंद्रालस लालसा खींच लूँगा मैं,
अपने नवजीवन का अमृत सहर्ष सींच दूँगा मैं,

द्वार दिखा दूँगा फिर उनको
है मेरे वे जहाँ अनंत
अभी न होगा मेरा अंत।

मेरे जीवन का यह है जब प्रथम चरण,
इसमें कहाँ मृत्यु ?
है जीवन ही जीवने
अभी पड़ा है आगे सारा यौवन
स्वर्ण-किरण कल्लोलों पर बहता रे, बालक-मन,

मेरे ही अविकसित राग से
विकसित होगा बंधु, दिगंत;
अभी न होगा मेरा अंत।।

संपादक मंडल

मार्गदर्शक
डॉ.एस.एच.फारुक़, प्राध्यापक प्रभारी (राजभाषा)
सलाहकार
डॉ.ए.के.सिंह, सहा. प्राध्यापक, एसबीएस
डॉ.आर.झा, सहा. प्राध्यापक, एसबीएस
डॉ.आर.के. सिंह, सहा. प्राध्यापक, एसईओसीएस
संपादक
श्री नितिन जैन, कनिष्ठ हिंदी अनुवादक